मुहावरे त कहावते संग्रह

पंगवाड़ी

मणिहेलु

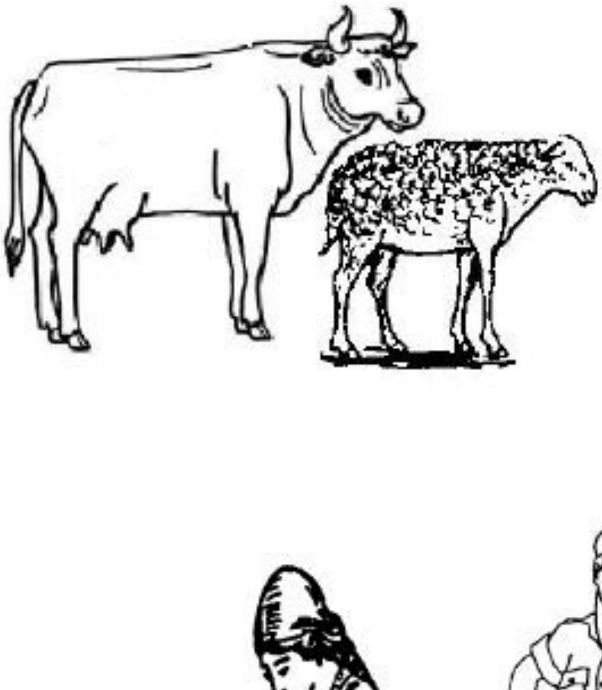

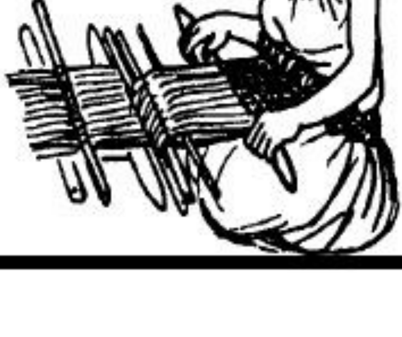

REVISED EDITION 2019

मणिहेलु

By

Pangiteam

Second revised edition: October 2013

Compiling team:-

Mr.Vinod, Seri Bhatwas

Mrs. Babita, Chowki

Mr. Binaya, Parmas.

This book can be reproduced for the contribution and development of the Pangwali language. No portion of this book may be reproduced in any form for commercial use, without written permission of the Compilers.

For further suggestions, contributions and involvement in development of Pangwali language, please contact

Vinod Mobile No. 9459828290

Babita Mobile No. 9418904168

Binaya Mobile No. 8988648566

Parmas village, Killar Post, Pangi, Chamba district. 176323.

☞ Mail to: info@pangi.in

☞ Would you like to read this book in your computer? Or you want to share this book to your friends and relatives, who are out of valley? For an electronic copy (pdf downloadable file) please visit our website www.pangi.in or mail to info@pangi.in

प्रस्तावना

मुहावरे त कहावत, बलि हर बोक अब्बुल लगती। जेस बोली अन्तर सुआ मुहावरे त कहावत भुन्ति, से बोली शुणु जे त बोक करुं जे तति खरि लगती। मुहावरे इये शुणुजे होरे त तसे मतलब होरा भुन्ता। बोक करिं त सबी पता भुन्ति पर मुहावरे सिर्फ तेस मेह्णु पता भुन्ते जेस अपु बोली सुसुर पता असि।

एचेल सुआ मेह्णु अपु बोली बिश्रीं लगो असे, खास कर मुहावरे। पांगी घाटी अन्तर होरे होरे मेह्णु ऐण लगो असे। त इ जरुरी भुण लगो असु की पंगवाड़ी अन्तर कुछ मुहावरे त कहावत किठि कइ के मेह्णु नजर अन्तर अण्हि असि।

उम्मिद असि कि इस किताब बलि असि सोबि मेह्णु, पंगवाड़ि भाषाई कुछ मुहावरे त संसारे मशहुर कहावते बारे पता लगता। अस उमेद कते कि, तुस सोब इस महेलु किताबे मज्जा नेन्ते।

धन्यवाद

संपादक

Preface

Idioms and Sayings are the beauty of a language. A language tends to be more beautiful and sweet, when there are many idioms. Idioms are those ways of expressions which sounds something and what those meant are far from reality. Everybody can speak a language but only those who speak idioms and sayings who know their language well.

In these days, people are forgetting their language, particularly the idioms and sayings. There are new people coming every day to Pangi valley. Therefore, it is becoming necessary to collect idioms and sayings and bring them out for the public. Since, the old idioms are becoming obsolete and new idioms coming every year with the younger generations it would be nice to make record of them and preserve them.

We hope that through this book we would get to know some idioms and sayings of Pangwali language and other famous voice sayings. We wish, you would enjoy going through the idioms and sayings of this Manihelu book.

Thank you.

Editor

- जीं उधार भारो सु - नाप -तोल कर देना। -कोई चीज पूरी भर के देना
- हातउ टुठी घेंण - आदत हो जाना -टाईप करुं जे तें हातउ टुठी गोसे
- भोटे मखीर करुं - थोड़ा थोड़ा कर के सब खा जाना।

भोटे मखीर करुं

गीहे कुकिड़ दाल बराबर भुन्ति

- गीहे कुकिड़ दाल बराबर भुन्ति -घर की चीज चाहे जितनी भी अच्छी हो, फिर भी औरों की चीज अच्छी लगना।
- पिठ एण - किसी पर बोझ होना-अउं कि तें पिठ ओसा ना।
- लघां तूए पुजा गुए - भेजा कहाँ, पहुँचा कहाँ।

- घटी घेण - अभ्यस्त/ आदि होना।
- बथ न केंण - जल्दी से चलना।
- अपु से अन्हारे बि केते - अपने लोगो को दुर से भी पहेचान लेना।
- दाछि पकणेल, कागे मुहँ बाड़ - सही समय पर खराबी आना।

बथ न केंण

- गुदिर गा - मरना, नीचे मनभाव से बोलना
- ढुक न तोपती शाग, उंघ न तोपती बछाण - जरुरत में कोई भी चीज चलती है।
- सुखान्ती नाओ - पसन्द ना करना। -शालु राणि तस सुखान्ती नाओ

ढुक न तोपती शाग, उंघ न तोपती बिछाण

जे भ्याग मारे कदि न हारे

- होरि चुल जिआणे जुल, अपु चुल सुने मुल - अपना घर अपना ही होता है।
- यक गिहे भांणे बजते रेहेन्ते - परिवार में झगड़ा होता रेहता है।
- जे भ्याग मारे से कदि न हारे - जो सुबह उठता है, उसका कोई भी काम अधुरा नहीं रहता।

- टन भइ लेउड, खा कुतुरे जंघ - घर में कमाने वाले होते हुए भी दुसरों को काम करने के लिए बुलाना।
- पेटे भारि भुण - गर्भधारण करना। (में जुएलि पेटे भारि असि।)
- लिच जुं शिच देन्ति -छोटि मुंह बड़ि बात।

पेटे भारि भुण

- जतु चादुर तती जंघ टडीं – जितनी कमाई है, उतना ही खर्चा करना। (*कोया, जतु चादुर तती जंघ टड, ना त अस सोब नगे भोई घेन्ते।)*
- हतोउ आले लगुं - चिन्तित होना। फिक्र होना। *(तें हतोउ आले किस लगो से?)*
- बख भोई घेण - थक जाना।

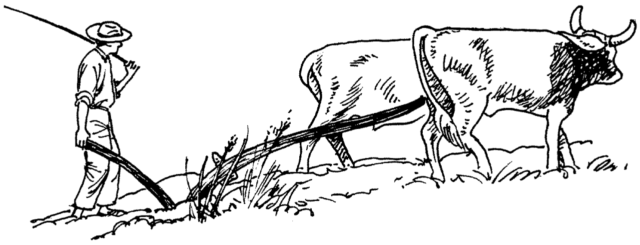

बख भोई घेण - थक जाना

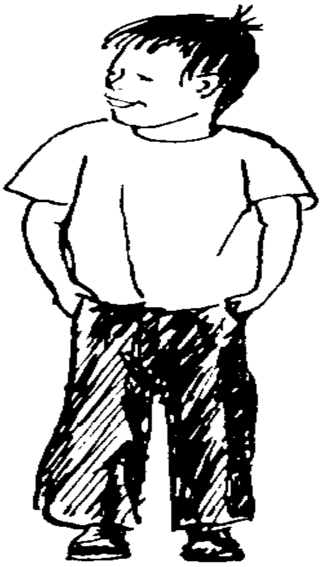

डेली गभुर आर-पार चंगु, दण तिहारे भुए नागु

- मुशे कन काठी मुशे हंगणीएली टाली- मेरी ही चीज मुझे देना ।
- डेली गभुर आर-पार चंगु, दण तिहारे भुए नागु - वे लोग जो अच्छे मौकों पर पुराने कपड़े पहेनते है और दुसरे दिनों में नए नए कपड़े पहनते हैं।
- बानरे ट्यारु, रशुणु ना करे: भेदभाव ना करना

- ना देणी बुध त मन्गे किढ़ण बार - देना तो नहीं है, ऐसै ही बहाना बनना।
- यक कान त सोउ मारते मुग - एक तीर से सौ मृग मारना।
- यक लिगं कठे हन्ड़ि शाग बणतु, दुबारि तथा आग लगति - एक बार तो किसी को ठग सकते हैं, पर दुसरी बार पकड़े जाते हैं।
- चोरे मन खादड़ा - चोर की मन गोठली पर होता है

चोरे मन खादेड़ा

- लुंगते जऊ कूण लगोसे जवानी में बुढ़ापा आ जाना।-जवान होकर भी काम न करना
- गुले फिउड़ु फटाण- बचप्न मे ही शादी का रिश्ता कर देना। -मेईं तें गुले फिउड़ु फटाउ।
- साचे बुढे जिआणु - सभी की बारी आती है, सभी का समय आता है।

लुंगते जऊ कूण लगे

- चुकिर तोड़ - सही ईलाज, समस्या का सही समाधान।
- ढिएड़ी केउ भूण - अनजान होना– मुंह बड़ खान्तु त पुंछिड़ बड़ ना कतु।
- शीते बुढ़ी टान्क - बार बार अराम करना।

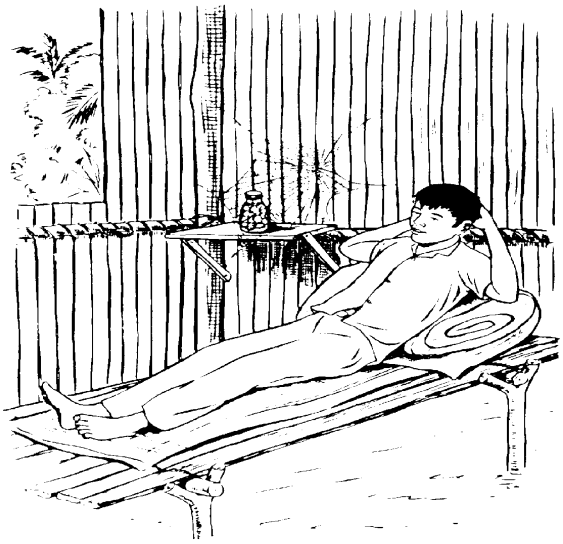

शीते बुढ़ी टान्क

- डा डा न शुखांते- आपस में मिल के ना रहना।
- न घाटि न बाधी - बेफिकर, बिना कोई चिन्ता में रेहना।
- गद्दी ना छई त ना मुंछी के - कोई फायदा न होना।
- मुंहु बाड़ देण - मजे को खराब करना।

- मगिरि हतोउ लई बिशुण -परेशानी में होना।
- अपुं चुल सुने मुल, बगानि चुल जियाणु जुल - पराया/ बेगानी चीज को सम्भाल के इस्तेमाल करना चहिए।
- चौड़ा भुंण - गुस्से में आना। - तु त तपल बड़ा चौड़ा भोई गा।

मगिरि हतोउ लई बिशुं

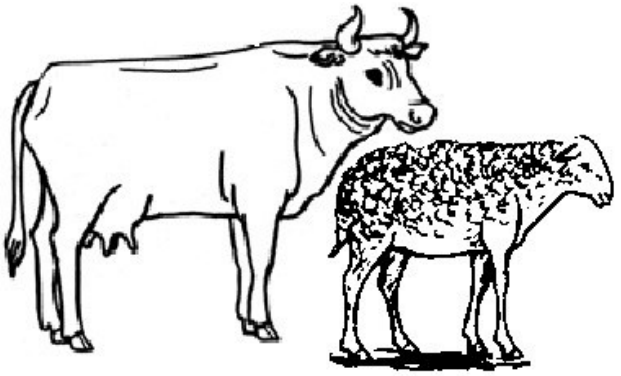

चुरीं चिरह्उ भूण

- चुरीं चिरह्उ भूण - पीछे पीछे चलना/ जाना। किसी का गुलाम बनना।
- टठु सुखाण छाणु - चुप करना। -लालु तसे टठु सुखाणी छड़ु।
- बटीड़ घेण - डर के मारे चुपचाप बैठना।

- किड़े खा रेजुड़ हेरि काश -रस्सी देख के डर लगना।
- ना गीहे ना घते – कहीं का भी ना रहना।
- बथ भिथ लगुं, फाट खड़ी घेण - रास्ता बन्द हो जाना/ रास्ता गुम हो जाना। (में अगर फाट खड़ी गोउ।)

किड़े खा रेजुड़ हेरि काश

- दांग भोल त घास बि भुन्तु - अगर मां है, तो बच्चे भी जरूर होंगे।
- जोत गा त बुढ़े याद आई - अपनी बारी आई त पिताजी को याद करना।
- थमे दुआरे हक शच - जो लोग दुसरो की बाते नहीं मानते हैं, उनको उनका खामियाजा भुकतना पड़ता है।

जोत गा त बुढ़े याद आई

- तु भोई गई लंकाई हूणी - कोई भी स्त्री, जो दुसरों के काम में विघ्न डालती रहती है, उसे कहते हैं।
- पूरा तें शला असा - घनिष्ठ, ना बिछड़ने वाला/ हमेशा साथ रहने वाला मनुष्य ।
- होरी के यक यक रो टाड़ु, मैं त पूरा टाउ टाड़ा/भास भुआ - किसी के अगर सभी बच्चे परीक्षा में उतीर्ण न हो पाए, तो ऐसा बोला जाता है।

पूरा तें शला असा

- जे उतौड़ा से बोउरा, जे धीरा से पूरा - जो धीरे काम करता है, वह सफलता को जरूर पाता है। जो जल्दवाजी में काम करता है, वह असफल होता है।
- कुतरे पेट घीउ ना टुगतु - गुप्त बातों को गुप्त ना रख पाना।
- 20 रेती चोरे, 21 एकीयु मालखे - चोर एक ना एक दिन पकड़ा जाता है।

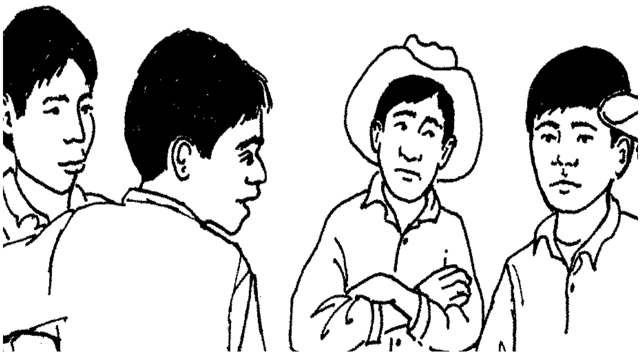

कुतरे पेट घीउ ना टुगतु

- घियाणी हाथ दे तोउं बि चोर, घियाणी पूरी चोर तोउं बि चोर - बुरे काम चाहें छोटा हो या बड़ा हो, बुरा ही होता है।
- न्यारे कियां कुनियरा भुईंया खरा: किसी का मदद कर के परेशान होने से तो अच्छा है कि चुपचाप बैठे।
- दुआरे दुआरे मेनी चुणीण - दर दर की ठोकरे खाना।

दुआरे दुआरे मेनी चुणीण

एलणी त कागे लुखुण ना करे बा

- मठुड़ जे न करुं भलु, से बिश्रि घेन्ता, स्याणे जे न करुं, से मरी घेन्ता - भलाई उसका करो, जो एहसानमंद होता है/होगा।
- एलणी त कागे लुखुण ना करे बा - एक दुसरे को दोष मत दो, एक दुसरे की बुराई ना करो, क्योंकि उस से दोनों की बुराई होती है।

- जिभुड़ लांठ देण - खामोश रहेना, चुपचाप रहना।
- यक त गद्दी शाहम धुशुण, उलटे गद्दी कियां जुते खाण - भलाई करने का बदला, बुराई से देना।
- खाला जी ए घर नेई - आसान काम नहीं, आसानी से होने वाला काम नहीं।

जिभुड़ लाठ देण

- अपु मुँह मिया मिठु भुण - अपनी तारीफ खुद करना
- कुतरेउ हलोटे स्वाद लगुंण - अपना ही बुराई करना।
- धी कती धंगा धंगा त धंग भुआ खड़िआ खड़िआ - किसी को ज्यादा बढ़ाने से वह और भी ऊपर उठना।
- स्याणे जुवान आमड़े स्वाद - बजुर्गों की बातें कड़वी होती है, पर उसका फल अच्छा है।

अपु मुँह मिया मिठु भुण

अन्हा देवता, टुंटा सा पुजारा

- बुड़ त हुड़ बराबर भुन्ता - अच्छा हो या बुरा मड़द को कोई फरक नहीं पड़ता।
- जाणकारे गी खन कुनाई, वैदे गी टा काने - दुसरों की मदद करना और अपना काम रहने देना।
- अन्हा देवता, टुंटा सा पुजारा - दोनो ही बेकार।
- गगड़ आण नगड़ पुठ - पथरीली जमीन पर बीज और सर्वहीन के पास बेटे।
- यक ना गिणुण- तत्क्षाणत चले जाना, बिना ईन्तजार किये चले जाना।
- टिरी चर्वी चढ़ि घेण/ मुंज लगण - गर्व में अन्धा हो जाना।

गगड़ आण नगड़ पुठ

- यक थूक त शह सुखे, सोउ थूके त हाड़ बके - ज्यादा बातों में अनर्थ की कमी नहीं होती।
- हगआटु भरोठु करण - सारा काम एक साथ खत्म करना
- ढेबु ढड्ड़ करण - सुआ खाण, बहुत ज्यादा खाना
- राकसिणि मोसी भुण - जबरदोस्ति का रिश्ता बनाना

घर पुर सच आग त दुआ मुहँ सजाग

- तोउ बुरु हमिउ हमिउ भु - कठिन मेहनत करना, रात दिन काम करना, लगातार काम करना
- कोल्हु बेल भुण - दिन रात काम करना, कठिन परिश्रम करना
- भोर शिकार टेम कुत्ती हगण - अखिर वक्त में ध्यान भ्रष्ट होना, अखिर समय में कोशिश छोड़ देना।

ढेबु ढड्ड़ करण

- दुई बुटे बणेयेल त धारे जोत बि जी सकते - दो साथ रहे त कोई बि बिपत्ती का सामना कर सकेंगे।
- बोउ ना डरुं कोया व्याह हेर, कुआ ना डरुं बोउए मरणे हेर – अपनी कर्तव्य निभाने से ना डरना
- घर पुर सच आग त दुआ मुहँ सजाग - सब कुछ बर्वाद है, फिर भी धमण्ड है

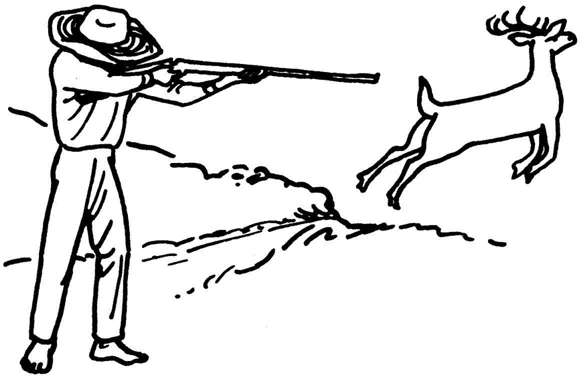

भोर शिकार टेम कुत्ती हगण

- पाव आटा त पंझा भुए फकीर - बहुत कम संसाधन होना
- बिलाह् त काठे बणाण, पर बोक केसे केआं दिआण - झुठी बातें तो बना सकते हैं, पर उस में सच्चाई लाना संभव नहीं।
- ढेड़ि मारि ना करे– बिना सूझबुझ कर किसी के पीछे चलना या अनुसरण करना। सब लोग एक जैसा ना करें।

पाव आटा त पंझा भुए फकीर

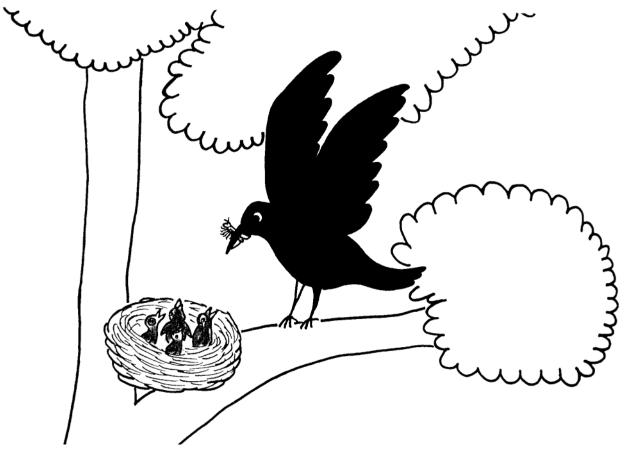

काग अपु यक जतु ट्यारु असु, ततरे ट्यारे चखरी अपु 12 बि असे

- काग अपु यक जतु ट्यारु असु, ततरे ट्यारे चखरी अपु 12 बि असे - हर किसी को आपने बच्चे बहुत प्यारे होते है, चाहे एक हो, चाहे 12 हो।
- धर्मे धागा पापे दौड़ा - जो लोग धर्म करते हैं, उनके लिए तो हर राह असान होती है। जो पाप करते हैं, उनको किसी भी राह पर चलाओ वह मुश्किल होती है।

- होर होरी गोदुड़ सपेही - औरों को दुसरी चीजो की पड़ी होती है।
- टठ मरणी मरी घेन्ता, पर बुकी केन्हेटु ना छांता। - अपनी जुवान, प्रतिज्ञा पर अटल रहना,
- चुलया निसी ढाट - अपने काम को छोड़ कर दुसरों का काम करना

चुलया निसी ढाट

- बलाए कि शुचु कि जुठु - लोगों की बातों का कोई परवाह ना करना, बार बार बोलने वाले को कहा जाता है
- ना छिछी ना बाछी, नदर राती हाछी - जिसका कोई ना हो, उसके लिए सभी लोग एक जैसे हैं।
- ढड्डड़ गोरु चारियेल त अपु पेट भरियेल, ना चारियेल त में की करियेल - जो काम करेगा, उसको लाभ/फल मिलेगा। नहीं करेगा तो दुसरों का कोई नुकसान नहीं,

होरी टाउ टाउ न देण

- यक मती पार, सउ मती ढिनो ढिन - सभी को खुश करने की कोशिश में बर्वादी होती है।
- ए भोई गा बानरे कीड़ा - किसी को वेवश कर देना
- लहूए हात भेरीन्ते पोणी धूईन्ते - किसी भी समस्या का सही समाधान होता है, हमें उसे सिर्फ ढूंडना है।

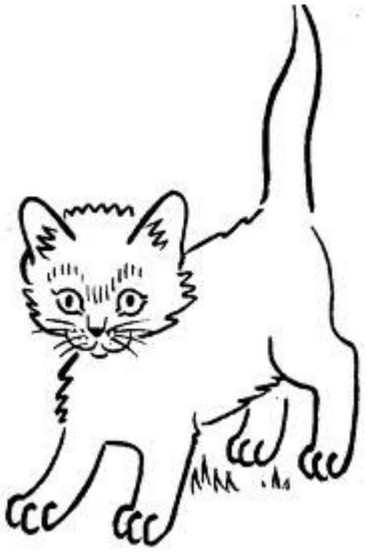

बलाए कि शुचु कि जुठु

- कुई भुई पेट, गिहुं भुए खेत, आई जुम्मेईया खा रोटी - समय से पहले ही तैयारींया शुरु करना, खुले आंखे सपने देखना
- होरी टाउ टाउ न देण - दुसरों को देख कर काम ना करें, अपने काविलियत के अनुसार काम करें।
- यक मती पार, सउ मती ढिनो ढिन - सभी को खुश करने की कोशिश में

यक मती पार, सउ मती ढिनो ढिन

- खांण अपु मर्जी, लांण लोके मर्जी - जो व्यक्तिगत है, उसे अपने हिसाब से करो, और जो सर्वजानिक है, उसे लोगों को देख कर करो
- उटे बड़ा टुट - अपनी बलाएं/बुराईंया दुसरों के सिर थोपनी।
- तु पुरी साचे चोखी भोई गई - उस स्त्री को उपहास कर के कहा जाता है, जो अपने सज्जावट के लिये ज्यादा समय लेती है।

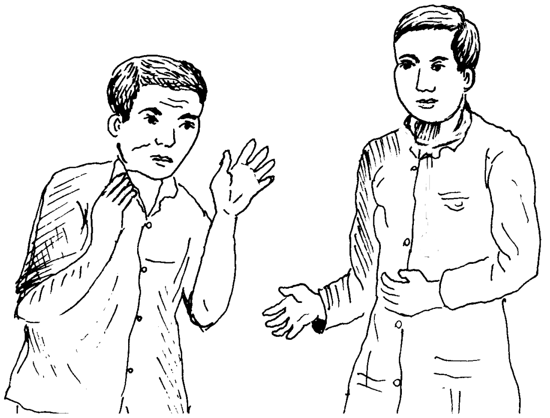

उटे बड़ा टुट

- मड़ा मरे, मंजा ना छड़े - जिद्दी, हट्ठी
- पूरीन्तु नऊ अपु, दोष होरी जे देण - काम खुद का नही होता है दोष ओरों को देना
- साचे नेण, चेहन्नि अण्हणण - बहुत दुख देना
- शवाल हेर धनीस करुण - दुसरो को देख के काम करना
- सेहिया मड़ा, बगोड़ जे - छोटा रास्ते छोड़ के लम्बे रास्ते आना

साचे नेण, चेहन्नि अण्हणण

- टीरी थुम दी बिशुंण: जानबुझ कर अनदेखा करना
- बहि हलि जे लगी कदेलि - कहा किसी को, बुरा लगा किसी ओर को
- बकरे घेंटेई न त पेट न त मुड़की - ऐसा चीज या काम जो किसी के भी काम में नहीं आती।

बहीं हलि जे लगी कदेलि

- बानरे आग ना करे - किसी चीज का लाभ सिर्फ खुद ना उठाओं, सभी को दो
- आग लगी लंकाई त फुकियु जम्मु कश्मीर - घर की झगड़े को पूरे गांव में फैलाना
- छाई बुटी कुठेणु - पल भर में ही अपने गुस्से को भुलने वाला इन्सान

बानरे आग ना करे

जनेनी खाण, मड़दे नहाण

- हेली रोशा कदेली - अपने काम का गुस्सा, किसी और पर निकालना।
- जनेनी खाण, मड़दे नहाण - जल्दी जल्दी, झटपट करना
- जे सेर घिन ईएरा, से सैर बि घिन ईएरा - जो बड़े काम करते हैं, उन के लिए छोटे काम कुछ भी नहीं।
- जेस सर मोटे, तेस पुले घाटा नेई - भीड़ के नेता या मुखिया के ऊपर ही सारा दोष लगता है।
- गुआरे लंन कियार - बड़े होकर बच्चों जैसी हरकत करना
- जेन्हि मारा सिंह तेन्हि भुई शरम, जेन्हि मारा गदण तेन्हि भुई विडाएई - नालायक को इज्जत मिलना, और लायक को बेज्जती होना

जेस सर मोटे, तेस पुले घाटा नेई

- घिए घड़ी छड़े, तथे बि शुके निसते – जितना भी करो, कहीं लोगों को भला नहीं लगता।
- बजन हलोटे टोड़े, दुन्त ना मेतु - बिना काम किये कुछ नहीं मिलता है।
- बाब-दॉदु याद एण - कठिन परिस्थिति में पड़ना,

बजन हलोटे टोड़े, दुन्त ना मेतु

- यक गागी छड़ण, होर गागी किढ़ण – बहुत शरारती होना
- धरती अम्मर कठा करण – बहुत मेहनत करना
- बुढ़ी सात लांकीड़ - थोड़ा थोड़ा करके पूरा खाजाना
- ढेस फूण भुआ जिमदारे, त मडिन्ते उच्छ त ढेबु – किसी और के लिए आपस में लड़ाई करना

ढेस फूण भुआ जिमदारे, त मडिन्ते उच्छ त ढेबु

- बलाह् त भाणेज, खाई पी टान उच्चाई – बिल्ली और भान्जा, खाने के बाद अराम से सो जाते हैं।
- घते गड़ाकि हेर कोई मुश डरते ना? - किसी के डराने, धमकाने से हमें डरना नहीं चाहिए।
- शहरे लाण, जहरे खाण – गांव की जिन्दगी शहर की जिन्दगी से बहुत अच्छि है।

बलाह् त भाणेज, खाई पी टान उच्चाई

पंगवाड़ी भाषा अन्तर मेहने मेहने पत्रिका

तुबारि

अपफ पढ़े त होरी भी पढ़ीण दिए

अगर तुसी लगतु कि असी अथ अन्तर

कुछ बदलाब करण असा त असी जे

बेफिकर भोई कड़ बोले।